आवश्यक वस्तु कीमत नियतन विधेयक

श्री के लकप्पा (टुमकुर) : मैं प्रस्ताव करता हूं कि आवश्यक वस्तुओं की कीमत स्थायी आधार पर नियत करने का उपबन्ध करने वाले विधेयक का पुरःस्थापित करने की अनुमति दी जाये। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : वे उस समय अनुपस्थित थे।

प्रो. मधु दण्डवते : यह अल्पमतस्क ही नहीं थे, अपितु अनुपस्थित भी थे।

श्री के. लकप्पा : मैं दूसरी बैठक में था मैं अल्पमतस्क प्रोफेसरों की बात समझ सकता हूं। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : प्रश्न यह है।

"कि आवश्यक वस्तुओं की कीमत स्थायी आधार पर नियत करने का उपवन्ध करने वाले विधेयक को पुरःस्थाप्ति करने की अनुमति दी जाये।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ :

श्री के. लकप्पा : विधेयक को पुरःस्थापित करने के लिए भी।

श्री सत्यसाधन चक्रवर्ती : वह सभा के बाहर व्यस्त रहें हैं।

अध्यक्ष महोदय : वह आज प्रातः आपके साथ व्यस्त हैं।

श्री के. लकप्पा : मैं विधेयक को पुरःस्थापित करता हूं।

दक्षिणी-ध्रुव (एन्टार्क्टिका) में प्रथम भारतीय वैज्ञानिक अभियान के सफलता पूर्वक उतरने के बारे में वक्तव्य

प्रधान मत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि हमारा पहला भारतीय वैज्ञानिक अभियान दिनांक 9 जनवरी, 1982 को 00.30 बजे दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक उतरा। विभिन्न क्षेत्री से लिए गए इक्कीस वैज्ञानिकों तथा तकनीशनों ने इसमें भाग लिया था।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य दक्षिणी ध्रुव के वायुमण्डलीय तथा अन्य परिस्थितियों का जो ऐसा विश्वास किया जाता है कि मानसून को नियंत्रित करती है, अध्ययन करना था। इस दल ने हिम सम्बन्धी, भूचुम्बकत्व, भूविज्ञान तथा भौतिक, रासायनिक तथा जैविक समुद्र विज्ञान से सम्बन्धित परीक्षण भी किए। उनके इन परीक्षणों में दक्षिणी ध्रुव के मार्ग में, दक्षिणी ध्रुव पर भी और वापसी यात्रा में, तापमान, दबाव, हवा की गति, आर्द्रता, धारातल-ओजोन, बादलों की दृश्यता, वितिरण, रेडियो तरंग का संचरण इत्यादि का मापन शामिल है।

दक्षिणी ध्रुव प्रदेश के भूमि पुंज पर हिम सम्बन्धी भूविज्ञान तथा भौतिक रासायनिक तथा जैविक परिस्थितियों का परीक्षण किया गया। चट्टानों के कुछ नमूने भी एकत्रित किए गए थे, जो डैकन में पाई जाने वाली चट्टानों के समान प्रतीत होते थे। तथापि, इस बात का पता

लगाने के लिए विस्तृत विश्लेषण की आवश्यकता है कि क्या डैक्न तथा दक्षिणी ध्रुव किसी समय एक साथ मिले हुए प्रदेश थे।

इस अभियान दल ने दक्षिणी ध्रुव में मौसम सम्बन्धी आंकड़ों को एकत्रित करने के लिए एक स्वचालित मौसम केन्द्र की स्थापना की थी। इस स्टेशन को ऊर्जा की पूर्ति भारत में निर्मित सौर पैनलों द्वारा की जाती है। कैसेट पर लगातार हुए रिकार्ड को वर्ष के अंत में पुनः प्राप्त किया जा सकता है और उसे आगे रिकार्डिंग के लिए फिर से बदला जा सकता है। स्टेशन की साइट को "दक्षिण गंगोत्री" का नाम दिया गया है, इस अभियान की यादगार के रूप में एक पीतल से बना फलक रखा गया है।

इस दल ने शून्य से नीचे के तापमान की परिस्थितियों में घड़ियों, वाकी-टाकी सैटों, सीमेंट, सूखे भोजन, बैटरियों, नाइलोन के रस्से जैसे भारतीय उपस्करों और वस्तुओं के गुण-प्रकार तथा उनकी कार्यक्षमता का सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया है। इस दल ने इस ध्रुव प्रदेश में करीब .1 दिन व्यतीत किए। इस दल के नेता लौट गए हैं और दल के अन्य व्यक्तियों के 20 फरवरी, 1982 के लगभग गोवा लौटने की आशा है।

दक्षिणी ध्रुव पर सफलापूर्वक उतरने से इस बात का एक और प्रमाण मिल गया है कि आवश्यकता पड़ने पर भारतीय वैज्ञानिक तथा तकनीशियन दुष्कर तथा जटिल कार्य शुरू करने की कार्यक्षमता रखते हैं। माननीय सदस्यगण जरूर चाहेंगे कि उनकी तरफ से मैं सम्पूर्ण दल को बधाई दूं। हम भारतीय नौसेना द्वारा प्रदान की गई मूल्यवान सेवाओं की भी सराहना करते हैं। जब इस तिथि का मूल्यांकन किया जाएगा तब वे दक्षिणी ध्रुव के इतिहास पर और हिन्द-महासागर क्षेत्र की जलवायु पर इसके प्रभाव पर महत्वपूर्ण प्रकाशन डालेंगे। इस उन्नत कार्य को प्रारम्भ करने में, भारत अब चुनिन्दा देशों की जमात में आ गया है। इस अभियान का महत्व और हमारी युवापीढ़ी पर इसका प्रभाव भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि इसकी वैज्ञानिक उपलब्धि। मैं आशा करती हूं कि इससे हमारी युवापीढ़ी वैज्ञानिक प्रवृत्ति से ओतप्रोत होगी और उन्हें समुद्र तथा समुद्री खोजयात्रा के लिए गहरी अभिरुचि दिखाने के लिए प्रोत्साहित करेगी। इस उपलब्धि का गौरव हमें आगे महत्वपूर्ण प्रयास करने के लिए प्रेरित करेगा।

अध्यक्ष महोदय : अब सभा मंगलवार 23 फरवरी, 1982 के ग्यारह बजे तक के लिये स्थगित होती है।

6.03 म. प.

इसके पश्चात लोक सभा मंगलवार 23 फरवरी 1982/4 फाल्गुन 1903 (शक) के 11 बजे म. पू. तक के लिए स्थगित हुई।

गुप्ता प्रिंटिंग वर्क्स,472 साईकिल मार्किट दिल्ली-6